RENAISSANCE (PART-2)

पुनर्जागरण

For :U.G.Part-1,Paper-2

पुनर्जागरण के कारण:

4. कुस्तुनतुनिया का पतन : 1453 ईस्वी में तुर्कों ने पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया फलत: वहां मौजूद बहुत से लेखक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, कलाकार इटली, फ्रांस, जर्मनी की तरफ पलायन कर गए और अपने साथ वे प्राचीन यूनानी एवं रोमन ज्ञान विज्ञान और चिंतन पद्ति को भी ले गए। कुस्तुनतुनिया यूरोप तथा पूर्वी देशों को जोड़ने वाली कड़ी था और कुस्तुनतुनिया पर आटोमन तुर्को का अधिकार हो जाने से यूरोपीय व्यापारियों के लिए यह मार्ग अवरुद्ध हो गया।फलतः नवीन व्यापारिक मार्गों की खोज आवश्यक हो गई। इस नई परिस्थिति के कारण अनेक खोजों ने पुनर्जागरण चेतना को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

5. **भौगोलिक खोजें :** पुर्तगाल एवं स्पेन के नाविकों ने अनेक जल मार्गों की खोज की। 1486 ईस्वी में बार्थोलोम्यू डियाज ने अफ्रीका के दक्षिणी छोर की खोज की तो 1492 में कोलंबस अमेरिका तट पर पहुंचा। 1498 में वास्को डी गामा केप ऑफ

Scanned with CamScanner

गुड होप से होते हुए भारत के कालीकट पहूंचा। इन भौगोलिक खोजों ने विभिन्न देशों में वैचारिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। इससे व्यक्ति के चिंतन शक्ति का विकास हुआ। मानव की क्षमता तथा उसके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई जो पुनर्जागरण में सहायक बनी ।

6. **<u>कागज एंव मुद्रण कला का आविष्कार :</u>** मध्ययुग में अरबों के माध्यम से यूरोप वासियों ने कागज बनाने की कला सीखी। 12 वीं शताब्दी में अरब के लोगों ने यूरोप को चल मुद्रण की उन तकनीकों से परिचित कराया जिनका विकास 11 वीं सदी में चीनियों द्वारा किया गया था। 15 वी शताब्दी के मध्य में जर्मनी के गुटेनबर्ग नामक व्यक्ति ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया और फिर धीरे-धीरे इटली, जर्मनी, स्पेन और फ्रांस में इस यंत्र का प्रयोग होने लगा। अब अधिक और सस्ती पुस्तकें छपने लगी। जन भाषा में पुस्तकों का प्रकाशन संभव हो सका। पुस्तकों ने लोगों को सारी बातों का ज्ञान देना प्रारंभ किया जिससे ज्ञान विज्ञान तथा धार्मिक ग्रंथों पर से पादरियों के नियंत्रण समाप्त हो गए। स्थानीय भाषाओं में पुस्तक का अनुवाद तथा उसकी सर्व सुलभता ने जनता को गुमराह होने से बचाया। **बिल इ्यूरा** ने लेखन कला के पश्चात मुद्रण कला को ही

Scanned with CamScanner

इतिहास का सबसे बड़ा अविष्कार माना है जिसने बौद्धिक चेतना का सर्वाधिक विकास किया।

7. **<u>मंगोल साम्राज्य का उदय :</u>** 13वीं शताब्दी में कुबलई खाँ ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना मध्य एशिया में की। इसमें रूस, पोलैंड, हंगरी शामिल थे। उसका दरबार पूर्व और पश्चिम के विद्वानों का मिलन स्थल था। प्रसिद्ध वेनिस यात्री मार्कोपोलो 1272 ईस्वी में कुबलई खां के दरबार में आया था। उसकी यात्रा विवरण यूरोप वासियों के मानस को उद्वेलित कर दिया। लोग मंगोल साम्राज्य तथा चीन की यात्रा करने के लिए उतावले होने लगे। यूरोप के लोग चीन की बारूद, कागज, मेरीनर कंपास आदि से परिचित हुए और इससे यूरोप में बौद्धिक जागरण की शुरुआत हुई।

8. **<u>शिक्षा एवं साहित्य का विकास :</u>** यूरोप के विभिन्न क्षेत्रों में विश्वविद्यालयों की स्थापना होने लगी थी। स्पेन में विश्व प्रसिद्ध कार्डोवा विश्वविद्यालय ने यूरोप में नवीन विचारों का प्रचार किया। उनके साहित्यकारों जैसे दांते(1265-1321),पेट्राक(1304-74) टॉमस मूर(1478-1538) ने प्राचीन ग्रंथों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद कर सांस्कृतिक गौरव को पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया।

Scanned with CamScanner

9. **<u>धनिक वर्ग का सहयोग:</u>** यूरोप के धनीक वर्ग के सहयोग के कारण भी बौद्धिक चेतना का प्रसार हुआ। इंग्लैंड के राजा हेनरी अष्टम , पोलैंड के सम्राट सिजिसमंड प्रथम, डेनमार्क के राजा क्रिश्चियन द्वितीय, स्पेन नरेश चार्लस पंचम तथा फ्लोरेंस का मेडिसी परिवार ने विद्वानों को आश्रय एंव आर्थिक मदद की जिससे साहित्य का सृजन हो पाया जो पुनर्जागरण में सहायक बना।

इन कतिपय कारणों के चलते 14वीं सदी से यूरोपीय देशों में पुनर्जागरण का आंदोलन प्रारंभ हुआ जो 16 वीं सदी में अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच गया। यह आंदोलन केवल इटली तथा स्पेन तक ही सीमित नहीं रहा अपितु इसका प्रसार 200 वर्षों तक करीब-करीब समस्त यूरोप में हो गया।

To be continued...

BY: ARUN KUMAR RAI

Asst.Professor

P.G.Dept.of History

Maharaja College,Ara.

Scanned with CamScanner